2 सितम्बर 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन

सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 11 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

एक साक्षात्कार : डॉ. भारिल्ल से

(जैन समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल से समाधि और सल्लेखना जैसी आज की ज्वलन्त समस्या पर प्रखर पत्रकार - अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के कार्याध्यक्ष एवं समन्वयवाणी के सम्पादक अखिल बंसल का दिनांक 12 अगस्त 2015 को लिया गया विशेष साक्षात्कार।)

अखिल बंसल - यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आपने सल्लेखना (समाधिमरण) पर एक किताब लिखी है; जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है, अभी प्रेस में है।

उक्त संदर्भ में मेरा **एक प्रश्न है** कि एक मुनिराज को कोई बीमारी नहीं है। सभी कुछ ठीक-ठाक है; परन्तु उनके पैर में गंभीर चोट लग जाने से वे खड़े नहीं हो सकते, दूसरों के सहयोग से भी खड़े नहीं हो सकते। ऐसी स्थिति में क्या उन्हें सल्लेखना ले लेना चाहिये या और भी कोई रास्ता है? कृपया मार्गदर्शन करें।

डॉ. भारिल्ल - मैं साधारण गृहस्थ हूँ, श्रावक हूँ; मुनिराजों का मार्गदर्शन करना मेरा काम नहीं है। उन्हें अपने दीक्षागुरु के सामने अपनी समस्या रखनी चाहिये।

अखिल बंसल - अब तो उनके पास एक ही रास्ता बचा है कि वे अन्न जल-त्याग कर सल्लेखना धारण कर लें; क्योंकि मुनिराज खड़े-खड़े आहार लेते हैं; जो उनके लिये अब संभव नहीं है।

डॉ. भारिल्ल - आहार जल त्याग कर मृत्यु का वरण कर लेने पर जहाँ भी जावेंगे; वह दशा निश्चित रूप से असंयम रूप होगी; क्योंकि जन्म के समय किसी भी गति में किसी को संयम नहीं होता।

अखिल बंसल - क्या असंयम से बचने के लिये उनके पास कोई अन्य रास्ता नहीं?

डॉ. भारिल्ल - जब खड़े होकर आहार नहीं ले सकते तो अब अपरिमित काल तक महाव्रत रूप सकल संयम को तो बचाया नहीं जा सकता; पर अणुव्रत के रूप में देशसंयम को तो बचाया ही जा सकता है। सातवीं प्रतिमा धारण कर लें तो देश संयम बच जायेगा।

पहले भी गुरुओं ने अपने योग्य शिष्यों को अपने अमूल्य नरभव को बचाने की सलाह और आदेश दिये ही हैं। आचार्य समन्तभद्र इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। चर्चित मुनिराज को भी अपने गुरु से ही आज्ञा लेना चाहिये, मार्गदर्शन लेना चाहिये।

आज भी अनेक लोग अपने गुरु की अनुमतिपूर्वक गृहस्थ के रूप में आपरेशन आदि इलाज कराते हैं और बाद में पुनः दीक्षा ले लेते हैं।

अखिल बंसल - आप भी विद्वान हैं और आपने सल्लेखना के बारे में अध्ययन भी खूब किया है। पुस्तक भी लिखी है। अतः आपको बात टालना नहीं चाहिये।

डॉ. भारिल्ल - टाला कहाँ है? जहाँ तक मेरी समझ है। मैंने उत्तर दे ही दिया है। मैंने तो ग्रहस्थों की सल्लेखना के बारे में अध्ययन किया है। वस्तुतः बात यह है कि अब हमारा भी समय आ गया है। अतः हमने तो स्वयं के कल्याण के लिये सल्लेखना के संबंध में गहरा अध्ययन किया है। लिखने से वस्तु व्यवस्थित हो जाती है। इसलिये उक्त अध्ययन-चिंतन को व्यवस्थित रूप प्रदान कर दिया है।

अखिल बंसल - आपके इस अध्ययन का लाभ भी तो सभी को मिलना चाहिये।

डॉ. भारिल्ल - मेरी भी यही भावना है।

अखिल बंसल - लोग तो सल्लेखना के समय श्रावकों को मुनि बना देते हैं और आप मुनिराज को श्रावक बनने की सलाह दे रहे हैं।

डॉ. भारिल्ल - मैंने तो आज तक किसी मुनिराज से श्रावक बनने का अनुरोध नहीं किया। मरणासन्न नहीं होने पर भी, संयम की रक्षा के नाम पर, आहारादि का त्याग कर मरण का वरण करने का निषेध जिनवाणी में स्थान-स्थान पर किया गया है; क्योंकि मरने पर तो संयम का नाश अनिवार्य ही है; क्योंकि जन्मते समय तो संयम कहीं भी नहीं होता।

यदि योग्य हों, पात्र हों, स्वस्थ हों, कोई दिक्कत न हो तो श्रावकों को मुनिराज बनने-बनाने में कोई दोष नहीं है। परन्तु अत्यन्त शिथिल अवस्था में, मुनिधर्म का स्वरूप न समझने वालों के अर्द्ध बेहोशी की हालत में कपड़े खोल देने से तो कोई मुनि नहीं बन जाता।

मुनिधर्म कितना महान है -अभी आपको इसकी कल्पना नहीं है। अत्यन्त शिथिल अवस्था में साधु बनने की बात तो अपने गले नहीं उतरती।

अखिल बंसल - अभी-अभी हाईकोर्ट का फैसला आया है कि

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

सम्पादकीय -

सूरज पश्चिम से कैसे निकल आया ?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे…)

कोई नहीं कह सकता कि किसके जीवन में कब क्या परिवर्तन आ जाये। पतित से पावन और पापी से परमात्मा बनने में भी देर नहीं लगती।

जो आज त्रिलोक पूज्य देवाधिदेव सर्वज्ञ परमात्मा के रूप में प्रतिष्ठित हैं, वे ही कभी पतित, पापी और पशु-पर्याय में थे। अत: पाप तो घृणा योग्य है, पर पापी नहीं।

पूजा-पाठ को ढोंग और पण्डिताई को पाखण्ड कहने वाले तथा मन्दिर जाने का कभी नाम न लेने वाले अपने मित्र विज्ञान को एक दिन मन्दिर में पूजा-पाठ करते और णमोकार मंत्र की माला फेरते देख ज्ञान को जहाँ एक ओर सुखद आश्चर्य हो रहा था, वहीं दूसरी ओर उसे अपनी आँखों पर सहसा विश्वास नहीं हो पा रहा था कि क्या वस्तुत: यह वही विज्ञान है, जिसे कभी मन्दिर के नाम से चिढ थी, जयजिनेन्द्र के नाम से नफरत थी, घृणा थी ?

ज्ञान सोच रहा था – आज यह सूरज पश्चिम से कैसे निकल आया ? कहीं यह विज्ञान की ही शक्ल-सूरत का कोई और तो नहीं है ? नहीं, नहीं; है तो यह विज्ञान ही। पर यह यहाँ आया कैसे ? जिस वजह से यह सदैव मेरी हँसी उड़ाया करता था, आज उसी के चक्कर में स्वयं कैसे आ गया ?

ज्ञान को आश्चर्य मिश्रित चिन्तन मुद्रा में देख उसका साथी सुदर्शन बोला -''कहो मित्र ज्ञान ! यहाँ बीच रास्ते में इस तरह खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो? क्या विज्ञान को मन्दिर में इस तरह भक्तिभाव से पूजा-पाठ करते देख तुम्हें भी आश्चर्य हो रहा है ?''

''हाँ भाई सुदर्शन ! बात तो आश्चर्य की ही है, ऐसा कौन परिचित व्यक्ति होगा, जिसे विज्ञान को इस रूप में देखकर आश्चर्य नहीं होगा ?

आपने देखा नहीं, कल तक यह अपने सामने किसी को कुछ गिनता ही नहीं था, किसी की कुछ सुनता ही नहीं था, धार्मिक प्रवृत्तियाँ तो इसे सपने में भी नहीं सुहाती थीं। खान-पान में न भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार, न दिन-रात का विवेक। जब जो जी में आया, खाया-पीया और मस्त। मदिरा तक से तो इसे परहेज नहीं था। अत: आश्चर्य की बात तो है ही।''

ज्ञान की बातों को सुन सुदर्शन ने कहा -''भाई ! यह सब ठीक है, पर इसमें ऐसे आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जिसकी होनहार भली हो और काललब्धि आ गई हो, उसे पलटते देर नहीं लगती। भगवान महावीर स्वामी के पूर्वभवों को ही देखो न ! मारीचि की होनहार भली नहीं थी तो तद्भव मोक्षगामी भरत चक्रवर्ती का पुत्र और आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का पौत्र होकर भी अपने मिथ्या मार्ग से नहीं पलटा। और जब भली होनहार का समय आ गया तो शेर की क्रूर पर्याय में भी सुलट गया, सन्मार्ग पा गया। यह तो समय-समय की बात है। क्या तुमने उस दिन आचार्यश्री के प्रवचन में वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त नहीं सुना था; जिसमें उन्होंने चार अभावों के माध्यम से पर्यायों की स्वतंत्रता समझाई थी ?''

सुदर्शन ने आगे कहा -''भाई ज्ञान ! जब पशु परमात्मा बन सकता है, सिंह जैसे क्रूर पशु को सम्यग्दर्शन हो सकता है, मारीचि जैसा मिथ्यादृष्टि महावीर बन सकता है तो विज्ञान ज्ञान की राह पर क्यों नहीं आ सकता ?''

''चलो, ठीक है सुदर्शन ! यदि तुम्हारी वाणी सही है तो तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर। पर अपने को तो अभी भी विश्वास नहीं हो पा रहा है। फिर भी हम तो यही कामना करते हैं कि -'हे भगवान ! उसे सद्बुद्धि आ जावे और वह अपना मानव-जीवन सफल कर ले, सार्थक कर ले।''

ज्ञान अपने मित्र विज्ञान के इस अनायास हुये परिवर्तन से मन ही मन बहुत प्रसन्न था। मित्र कहते ही उसे हैं जो अपने मित्र का हृदय से हितचिन्तक होता है और उसके भले के लिये सदा अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिये तत्पर रहता है।

ज्ञान ने भी विज्ञान को सन्मार्ग पर लाने का अपनी शक्तिभर कोई भी प्रयत्न शेष नहीं छोड़ा था। धर्मवात्सल्य का स्वरूप ही ऐसा है। पर, जब तक उपादान जागृत न हो, तब तक कोई भी व्यक्ति अपने विकल्पों के सिवाय पर में कर भी क्या सकता है ? इस वस्तुस्वरूप का विचार करके ही ज्ञान ने अपने मन को समझा लिया था। वस्तुस्वरूप की सही समझ ही वस्तुत: सुखी होने का एकमात्र उपाय है।

ज्ञान विज्ञान की प्रवृत्ति को अपने मन के अनुकूल देखकर मन ही मन भारी प्रसन्न तो था ही, कुछ-कुछ हँसी-मजाक के मूड में भी आ गया था। अत: विज्ञान को एक दिन पुजारी के रूप में पीले वस्त्र पहिने मन्दिर जाते देख उसे चिढाने के उद्देश्य से बोला - ''कहो, भाई विज्ञान ! दूसरों की हंसी उड़ाने वाले आज स्वयं हंसी के पात्र कैसे बन बैठे ? दूसरों को पाखण्ड के चक्कर में फँसा कहनेवाले आज स्वयं इस पाप-खण्डन के चक्कर में कैसे पड़ गये, जो सवेरे-सवेरे संन्यासी बने मन्दिर जा रहे हो ?''

अपनी झेंप मिटाते हुये विज्ञान बोला -''इसे भी तुम एक तरह

का चमत्कार ही समझ लो न !''

ज्ञान -''ठीक है, चमत्कार ही सही, पर यह भी तो बताओ कि चमत्कार कब, कैसे और कहाँ हुआ ? मुझे तुम्हारे मुख से वही सब तो सुनना है।''

''ठीक है भाई ! मैं सुनाऊँगा, अवश्य सुनाऊँगा, तुम्हें नहीं सुनाऊँगा तो और किसे सुनाऊँग; पर अभी नहीं, फिर कभी फुरसत में सुनाऊँगा। अभी तो पूजन का समय हो रहा है। सभी लोग मंदिर में मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। आज सामूहिक पूजन करने का कार्यक्रम है न।''- ऐसा कहकर विज्ञान मंदिर चला गया और ज्ञान अपने घर।

ज्ञान के मन में विज्ञान में हुये इस जादुई परिवर्तन के बारे में जानने की उत्सुकता बराबर बढती जा रही थी। वह जानना चाहता था कि आखिर यह हथेली पर आम जम कैसे गया ? उसे विचार आया कि -''कहीं हम लोगों को खुश करने के लिये इसकी यह कोई नाटकीय चाल तो नहीं है। अथवा किसी भय की आशंका से यह किसी मंत्र-तंत्रवादी के चक्कर में तो नहीं आ गया ? कभी-कभी कुछ लोग लौकिक प्रयोजन की पूर्ति की अभिलाषा से अथवा किसी लोभ-लालच में पड़कर भी पूजा-पाठ करने लगते हैं - इसके साथ में भी ऐसा कोई चक्कर तो नहीं है ?

नहीं, नहीं; वह इतना नादान तो नहीं है, जो ऐसी बातों में आ जाये। और ऐसा कायर व लोभी भी नहीं है, जो किसी तरह के भय, आशा, स्नेह व लोभ-लालच में पड़कर यह सब आडम्बर करे।''

ज्ञान किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पा रहा था। उसे पुन: विचार आया -''कुछ नहीं कह सकते। कभी-कभी अच्छे-अच्छे समझदार लोग भी इन मंत्र-तंत्रवादियों के चक्कर में आ जाते हैं।''

विज्ञान के हृदय परिवर्तन की बात अब भी ज्ञान को रहस्यमयी बनी हुई थी।

यद्यपि वह विज्ञान की पैनी बुद्धि, सरल हृदय और सज्जन स्वभाव से भलीभाँति परिचित था। पर महत्वाकांक्षायें और मानव स्वभाव की कमजोरियाँ क्या-क्या असंभावित परिकल्पनाएँ नहीं करा लेतीं। इससे भी वह अपरिचित नहीं था।

उधर सुदर्शन भी यही सोच रहा था -''विज्ञान का यह आचरण और व्यवहार क्या किसी कूटनीति का परिणाम भी हो सकता है ? उसकी बातचीत व स्वभाव से ऐसा लगता तो नहीं है, पर कोई क्या जाने किसी के परिणामों को ? परिणाम की गति भी बड़ी विचित्र व चंचल होती है। कब-कैसे हो जावें ? कोई नहीं कह सकता।''

आत्मविज्ञान को समझने के लिये विज्ञान के पास रसायन-विज्ञान या भौतिक-विज्ञान की भाँति ऐसी कोई प्रयोगशाला तो थी नहीं, जिसमें वह आत्मा-परमात्मा की सिद्धि के लिये प्रयोग कर सके तथा जिस प्रयोगशाला में आत्मज्ञान का प्रयोग होता है, उससे वह अभी कोसों दूर था।

आत्मा की उपलब्धि के लिये तो केवल आगम, युक्ति और स्वानुभव ही असली प्रयोगशाला है, जिसके स्वानुभव में आ जावे, प्रतीति में आ जावे तो ठीक, अन्यथा उसके प्राप्त करने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

विज्ञान बातचीत के बीच-बीच में जो तर्क-वितर्क करता था, उससे भी ऐसा आभास नहीं मिलता था कि अभी उसे जिनागम के मूलतत्त्व में आस्था हो गई है। अत: यह कहना कठिन था कि उसके पूजा-पाठ करने के पीछे क्या रहस्य है ?

ज्ञान सोच रहा था -''संभव है बचपन में उसके दादाश्री द्वारा उसे जो पौराणिक कथायें सुनाकर संस्कारों के रूप में तत्त्वज्ञान के बीज डाले गये थे, वे ही अनुकूल वातावरण पाकर अंकुरित होने लगे हों। कोई किसी के मन को क्या जाने कि उसके मन में कब से, कैसा/क्या परिवर्तन हो रहा है ?''

ज्ञान भी विज्ञान में हो रहे अन्तर के परिवर्तन को कैसे पहचान सकता था। उसने तो विज्ञान को अबतक उसी रूप में देखा था। अत: उसमें अनायास हुये परिवर्तन को जानने की उसकी जिज्ञासा स्वाभाविक ही थी। अत: अगले दिन जब ज्ञान की विज्ञान से मुलाकात हुई तो सबसे पहले ज्ञान ने अपनी उत्सुकता प्रकट करते हुये कहा -''भाई ? आज तो तुम्हें अपने इस परिवर्तन की कहानी मुझे सुनानी ही होगी।''

(क्रमश:)

जिनेन्द्र शास्त्री ट्रस्टी नियुक्त

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री को ट्रस्टी मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर डॉ. जिनेन्द्र को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, पण्डित रतनचंद भारिल्ल, श्री अमृतभाई मेहता, श्री प्रेमचंद बजाज कोटा, पण्डित राजकुमार जैन जैनदर्शनाचार्य, पण्डित पीयूष शास्त्री, डॉ. ममता जैन, श्री कन्हैयालाल दलावत, ट्रस्ट अध्यक्ष श्री ललित कीकावत ने शॉल व दुपट्टा ओढाकर, पगड़ी पहनाकर एवं प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया और ट्रस्टी की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि ट्रस्ट द्वारा संचालित देश का सर्वप्रथम जैनदर्शन कन्या महाविद्यालय का शुभारम्भ हालही में किया गया है।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(अठारहवीं कड़ी, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि – हम इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते हैं कि मैं अनादिकाल से अनंतकाल तक रहने वाला त्रिकाली जीवतत्त्व आत्मा हूँ। हमारे अपने स्वरूप के बारे में हमारा यह अनिर्णय हमारे लिये किसप्रकार अहितकर है – यह जानने के लिये पढिये –

तू बात तो ठीक कहता है, किसी के कहने से यूं ही कुछ भी कैसे मान लें?

एक बात बतलायेगा ?

तूने यह कैसे जाना कि यही तेरे पिता हैं ?

सिर्फ उनके या किसी के कहने से ही न ?

क्या कभी तूने इस बात की परीक्षा की ?

क्या तूने इस बात की आवश्यकता भी समझी ?

नहीं न ?

सिर्फ किसी के कहने से ही मान लिया न ?

तो फिर आचार्यों और गणधर देव के मुख से सुनी हुई सर्वज्ञदेव की इस वाणी पर तुझे क्यों भरोसा नहीं होता है कि ''तू अनादि–अनंत है''?

क्या सर्वज्ञदेव की वाणी किसी भी अन्य से गई गुजरी है ?

सिर्फ यही नहीं, तू जो कुछ भी जानता और मानता है सब कुछ ही तो किसी न किसी रागी–द्वेषी अज्ञानी जीव के मुख से सुना हुआ ही है न ?

तूने कब किस–किस बात की परीक्षा की है ?

जो मास्टरजी ने कहा सो मान लिया, जो डॉक्टरजी ने कहा सो मान लिया।

जो मित्रों ने कहा सो मान लिया, जो दुश्मनों ने कहा वह भी मान लिया।

और तो और हम अनेकों बार अनेकों धूर्तों की झूठी बातों में भी आ गये।

अब वीतरागी–सर्वज्ञ की बात आई तो होशियारी करता है ? उन पर अविश्वास करता है ?

अरे भोले ! क्या तूने कभी सोचा कि इसप्रकार कुटिलता का व्यवहार करके तू किसे छल रहा है ?

अरे ! अपने आप को ही न ?

किसका अहित कर रहा है ?

अपना ही न ?

अरे नादान ! तू अपनी यह धूर्तता कब छोड़ेगा ?

मेरी उक्त बातों को सुनकर तू यह मत समझ बैठना कि मैं तुझे आज्ञा प्रधानी बनने के लिये प्रेरित कर रहा हूँ।

कदापि नहीं।

तू स्वयं परीक्षा कर ना !

आगम के वचनों को तर्क और युक्ति से प्रमाणित कर ! कौन रोकता है तुझे ?

उसमें यदि बुद्धि न चलती हो तो उपलब्ध विशेष ज्ञानी लोगों की संगति कर, उनसे विनयपूर्वक अपनी शंकाओं का समाधान कर, यदि तब भी उत्तर न मिले और संतुष्टि न हो तो स्वयं ही आगम का गहन अभ्यास कर।

कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है कि **यह देह छूटने से पूर्व येनकेन प्रकारेण उक्त निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास कर कि ''मैं यह ज्ञानस्वभावी जीवतत्त्व आत्मा, कभी भी उत्पन्न और नष्ट न होने वाला, अनादि–अनन्त द्रव्य हूँ।'' इस विषय को यूं ही अनिर्णीत छोड़ देना योग्य नहीं, यह तेरे हित में नहीं है।**

आगम के जिन वचनों को प्रमाणित करने के लिये हमारे पास तर्क और युक्ति न हो उनके लिये हमें अनुमान का सहारा लेना चाहिये।

लोक में तो हम निरंतर ऐसा करते ही हैं।

हमें कोई अत्यन्त कष्टप्रद या जीवन के लिये घातक बीमारी हो जाये और किसी भी डॉक्टर के पास उसका उपचार न हों तब भी हम प्रयत्न करना बंद नहीं कर देते हैं, कुछ सुनी–सुनाई बातों, किसी अन्य के अनुभवों और अपने अनुमानों के आधार पर अन्यान्य डॉक्टरों, वैद्यों और यहाँ तक कि (न करने योग्य) नीम हकीमों एवं झाड़ने–फूंकने वाले मंत्र–तंत्रवादियों तक के पास भी हो ही आते हैं।

जब हम अपने इस क्षणभंगुर जीवन को कुछ काल के लिये बचाने के लिये इतने प्रयत्न करते हैं तो अपनी इस आत्मा की अमरता को सुनिश्चित करने के लिये क्या नहीं करना चाहिये ?

जरा अपने अंतर को टटोलकर तो देखिये ! हम कितना भी कहें कि परभव (इस जीवन के बाद का जीवन) किसने देखा और अपने व्यवहार में हम उसके प्रति कितने ही लापरवाह क्यों न दिखें, पर सच तो यह है कि हमारे अन्दर यह अहसास कूट–कूटकर भरा है कि इस जीवन के बाद भी हम रहेंगे और हम सदा इसीलिये भयभीत भी रहते हैं कि हमें अपने वर्तमान कुकृत्यों का भयंकर दुष्परिणाम अपने आगामी जीवनों में भोगना पड़ेगा। अन्यथा कोई कुकृत्य करने से डरे ही क्यों ?

इस जीवन में तो भयंकरतम क्या हो सकता है उसकी कल्पना तो हम सभी को भलीभांति है ही और अव्यक्त में (in subconscious) मन ही मन हम उसका सामना करने के लिये तैयार भी हैं।

यदि हमारे मन में आगामी जीवनों में वर्तमान कुकृत्यों का फल भोगने का भय ही न रहे तो सच मानिये, इस लोक में लोगों के व्यवहार में इतनी भी नैतिकता कायम रह ही नहीं सकती है।

होता तो यह है कि **आत्मा की अनादि–अनंतता के विषय में विश्वास होते हुये भी अपने निर्णय में दृढता के अभाव में हम सब सुविधाभोगी आचरण करते रहते हैं।**

जब हमें अपना हित आत्मा की नित्यता और अनादि–अनंतता में दिखाई दे तब हम उसकी दुहाई देने लगते हैं और जब हमें आत्मा की नश्वरता अभीष्ट हो हम उसकी अनादि–अनंतता पर शंका व्यक्त करने लगते हैं।

जब हमें अपने प्रतिद्वंद्वी को डराना हो या उससे अपने हित में कोई अनुकूल कार्य करवाना हो तो हम उसे आगामी भव में अच्छे परिणामों का लालच देकर

लुभाने का प्रयास करते हैं और जब कोई इसी औजार का इस्तेमाल हमारे ही ऊपर करे तो हम कहने लगते हैं कि ''कल किसने देखा ?''

जब हमारा असंयम जोर मारता है और हम दुराचरण करने की ओर प्रवृत्त होते हैं तो हम अपने वर्तमान के इस पाप के भविष्य में संभावित फल की ओर से आँख मूंदने के लिये कहने लगते हैं कि ''कल किसने देखा'', मानो इसके आँख मूंद लेने मात्र से खतरा टल गया हो। इसके विपरीत यदि कोई अन्य व्यक्ति हमारे वर्तमान हितों के विरुद्ध आचरण करे तो हम उसे भविष्य में (अगले जन्म में) उसके पापों का फल भोगने की दुहाई देने लगते हैं।

हमारे उक्त आचरण के मायने बिलकुल साफ हैं कि कोरी मान्यता के स्तर पर हमें आत्मा की अनादि-अनन्तता के प्रति कोई एतराज नहीं है पर ऐसी मान्यता के कारण वर्तमान में हमें यदि कोई छोटा सा हित भी बाधित होता प्रतीत होता हो तो हम अपनी इस मान्यता के प्रति निष्ठावान नहीं बने रहना चाहते हैं।

क्यों ?

इसका **एकमात्र कारण यही है कि आत्मा की अनादि-अनंतता का हमारा निर्णय संशय रहित नहीं है या यूं कहें कि आत्मा की अनादि-अनंतता का सिद्धांत हमारे ज्ञान का ज्ञेय तो है पर उसकी सत्यता के बारे में हमारा कोई निर्णय नहीं है।**

तो क्या हम इसी अनिर्णय की स्थिति में बने रहना चाहते हैं, क्या इसका संशय रहित निर्णय होना हमारे लिये महत्वपूर्ण और आवश्यक नहीं है ?

उक्त निर्णय करना हमारे लिये किस प्रकार महत्वपूर्ण और आवश्यक है यह जानने के लिये पढें इस श्रृंखला की अगली (उन्नीसवीं) कड़ी अगले अंक में - **(क्रमशः)**

हार्दिक बधाई

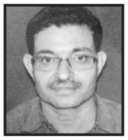

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर की राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्टालीखेड़ा उदयपुर में जुलाई माह में प्रधानाचार्य पद पर पदोन्नति की गई है। ज्ञातव्य है कि आपको राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग द्वारा राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

9 से 16 सितम्बर	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
18 से 29 सितम्बर	दिल्ली (विश्वासनगर)	दशलक्षणपर्व
2 अक्टूबर	जयपुर (टोडरमलजी मंदिर)	ताम्रपत्र-मोक्षमार्गप्रकाशक विमोचन
18 से 27 अक्टूबर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	शिक्षण शिविर
31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
8 से 12 नवम्बर	देवलाली-नासिक (महा.)	भ.महावीर निर्वाणोत्सव
18 से 25 नवम्बर	जयपुर (टोड. स्मारक भवन)	सिद्धचक्र मण्डल विधान
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

दशलक्षण महापर्व में तत्त्वप्रचारार्थ कहाँ-कौन?

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ अनेक स्थानों से विद्वान हेतु आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। पर्व प्रारम्भ होने में अभी 20 दिन का समय शेष है। विगत 17 अगस्त 2015 के अंक में दिनांक 11 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार 302 स्थानों पर निश्चित विद्वानों की सूची प्रकाशित की गई थी। अब दिनांक 28 अगस्त तक कुल 404 स्थानों पर विद्वान निश्चित हो चुके हैं। नवीन स्थानों पर निश्चित विद्वानों की सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है-

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. हरदा : ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली, **2.लुकवासा :** पण्डित विजयजी शास्त्री जयपुर, **3. मंदसौर (नई आ.) :** पण्डित संदीपजी शास्त्री, **4. बदरवास :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री, **5. बण्डा :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, **6. नरवर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री गौरझामर, **7. छिन्दवाड़ा (गांधीगंज) :** पण्डित सौरभजी शाह शास्त्री, **8. शुजालपुर मण्डी :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, **9. अम्बाह :** पण्डित दीपकजी शास्त्री केसली, **10. इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, **11. विदिशा (किलाअन्दर) :** पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, **12. ग्वालियर (सोड़ा का कुआ) :** पण्डित फूलचंदजी हिंगोली, **13. बीड :** पण्डित आकाशजी शास्त्री कोटा, **14. कुचड़ौद :** पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री अमरोहा, **15.16. राघौगढ :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर व पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री भिण्ड, **17.18. द्रोणगिरि :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली व ब्र.महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, **19. सागर (बालकव्यू) :** पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, **20. सागर (मकरोनिया) :** पण्डित शुभमजी शास्त्री भिण्ड, **21. बेगमगंज (तारण-तरण) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, **22. इन्दौर :** विदुषी प्रतीति शास्त्री, **23. लुकवासा :** पण्डित विजयजी शास्त्री जयपुर, **24. दलपतपुर :** पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियांधाना, **25. भानगढ :** पण्डित शुभांशुजी शास्त्री कोटा, **26. बाकानेर :** पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, **27. महिदपुर :** पण्डित विकासजी शास्त्री मौ, **28. चांदामेटा :** पण्डित वैभवजी शास्त्री गोरमी, **29. कटनी :** पण्डित निवेशजी शास्त्री खरगापुर, **30. पंधाना :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री बंडा, **31. खिरकिया :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री ललितपुर, **32. पथरिया :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, **33. धामनौद :** पण्डित वैभवजी शास्त्री भिण्ड, **34. करहिया :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर, **35. शुजालपुरसिटी :** पण्डित नमनजी शास्त्री भिण्ड, **36. गौरझामर :** पण्डित योगेशजी शास्त्री देवरी, **37. पौहरी :** पण्डित नमनजी शास्त्री खनियांधाना, **38. विदिशा (अरहंत विहार) :** पण्डित भीकमजी खामगांव, **39. खनियांधाना :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर, **40. गोहद :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल, **41. गोरमी :** ब्र. केशरीचंदजी धवल छिन्दवाड़ा, **42. पचमढी :** पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा।

महाराष्ट्र प्रान्त

1.2. मुम्बई (घाटकोपर) : डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी गुढाचन्द्रजी एवं पण्डित सौरभ शास्त्री कोटा, **3. मुम्बई (कांदीवली) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, **4.मुम्बई (बोरीवली-विधान) :** पण्डित सम्मेदजी शास्त्री टीकमगढ, **5. मुम्बई (भायंदर-वेस्ट) :** ब्र. रविजी ललितपुर, **6. बेलोरा :** पण्डित सागरजी शास्त्री ध्रुवधाम, **7-9. कारंजा (गुरुकुल) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित चिन्तामणि शास्त्री औरंगाबाद एवं पण्डित सतीशजी शास्त्री गव्हारे, **10. फालेगांव :** पण्डित विनयजी शास्त्री हटा, **11. कोल्हापुर :** पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगांव, **12. कलम्ब :** पण्डित संदेशजी शास्त्री कुम्भोज बाहुबली, **13. वरुड :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री जयपुर, **14. शेलुद :** पण्डित सौरभजी दुरुगकर शास्त्री, **15.मालेगांव :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री औरंगाबाद, **16. सेनगांव :** पण्डित प्रियांशुजी शास्त्री भिण्ड, **17. मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी, **18. डासाला :** पण्डित पारसजी शास्त्री जयपुर।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

सल्लेखना आत्महत्या जैसा ही है। अतः सल्लेखना लेने वाले और उन्हें प्रेरणा देने वालों पर कानूनी कार्यवाही की जाय।

उक्त आदेश से सम्पूर्ण समाज क्षुब्ध है, उसके विरुद्ध आन्दोलन कर रहा है। उस संबंध में आपका क्या कहना है?

डॉ. भारिल्ल – उक्त आदेश जैनधर्म पर कुठाराघात है। उसका प्रतिकार तो किया ही जाना चाहिये। उस आदेश को निरस्त कराने के लिये जो भी अहिंसक उपाय करना पड़े, हमें करना ही चाहिये।

उक्त सन्दर्भ में समाज जो कुछ कर रहा है, उसमें हमारी पूरी अनुमोदना है और हम मन-वचन-काय से पूरी तरह सबके साथ हैं।

उक्त आदेश को तो निरस्त करा ही लिया जायेगा। पर हमें इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिये कि इसप्रकार के प्रसंग बनने का मूल कारण क्या है?

अखिल बंसल – इस संबंध में आप क्या सोचते हैं?

डॉ. भारिल्ल – मेरी समझ में इसका एकमात्र कारण वे बड़े-बड़े उत्सव हैं, जो हम प्रभावना के नाम पर करते हैं। बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार करते हैं, अखबारों में देते हैं। ऐसा लिखते हैं कि उन्होंने खाना बन्द कर दिया है, अकेला पानी ले रहे हैं। अब वह भी बन्द कर दिया गया है।

इन सब बातों से ऐसा लगता है कि स्वस्थ व्यक्ति का भोजन-पानी बन्द कर दिया है।

सल्लेखना एक व्यक्तिगत क्रिया है। उसका अनुष्ठान गुरु के सान्निध्य में होता है। उसके प्रचार-प्रसार की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है। सल्लेखना एक सहज प्रक्रिया है। उसमें इतना आडम्बर करने की आवश्यकता नहीं है।

अखिल बंसल – आवश्यकता क्यों नहीं है? यह तो एक महोत्सव है, मृत्यु महोत्सव है।

डॉ. भारिल्ल – महोत्सव तो है, पर उसमें आडम्बर नहीं है, रोना-गाना नहीं है।

इस सन्दर्भ में तो मैंने अपनी पुस्तक में लिखा है –

"कुछ विचारकों ने इसे महोत्सव कहा है, मृत्यु महोत्सव कहा है; पर इस महोत्सव में कोलाहल नहीं है, भीड़-भाड़ नहीं है। नाच-गाना नहीं है, झाँझ-मजीरा नहीं है, आमोद-प्रमोद नहीं है, खानापीना नहीं है, खाना-खिलाना भी नहीं है। किसी भी प्रकार का हलकापन नहीं है।

कषायों का उद्वेग नहीं है, रोना-धोना भी नहीं है। शोक मनाने की बात भी नहीं है। एकदम शान्त-प्रशान्त वातावरण है, वैराग्य भाव है, गंभीरता है, साम्यभाव है।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि आप यह सब क्यों बता रहे हैं? इस बात को तो सभी लोग जानते हैं कि **यह एक गंभीर प्रसंग है, इसमें उछलकूद की आवश्यकता नहीं है।**

बात तो आप ठीक ही कहते हैं; परन्तु कुछ लोग महोत्सव का अर्थ ही विशेषप्रकार की धूमधाम समझते हैं और इस प्रसंग को भी वही रूप देना चाहते हैं। उन्हें तो कुछ भी हो, नाचना-गाना है, जुलूस निकालना है।

दीपावली पर भगवान का वियोग हुआ था, सभी जानते हैं; पर जिनको खुशियाँ मनानी हैं, पटाके छोड़ना है, लड्डू खाने हैं; वे तो खुशियाँ मनायेंगे ही, पटाके छोड़ेंगे ही, लड्डू खायेंगे ही। कौन समझाये उन्हें?

समाधिमरण और सल्लेखना एकदम व्यक्तिगत चीज है। इसे सामाजिक रूप देना, प्रभावना के नाम पर इसका प्रदर्शन करना, प्रचार-प्रसार करना उचित नहीं है।

पत्रकारों को बुलाना, रोजाना स्वास्थ्य बुलेटिन निकालना, साधक को जांच यंत्रों में लपेट देना, इन्टरव्यू लेना – ये सबकुछ ठीक नहीं है; अतिशीघ्र इस भव को छोड़ देने की तैयारी करने वालों को इन सबसे क्या प्रयोजन है?

आप कह सकते हैं कि ऐसा करने से धर्म की प्रभावना होती है।

प्रभावना तो नहीं होती, बल्कि ऐसा वातावरण बनता है कि लोग कहने लगते हैं कि **यह तो आत्महत्या है। सरकार भी दबाव बनाने लगती है। यदि कोर्ट ने कुछ कह दिया तो अपने को धर्म संकट खड़ा हो जाता है।**

हमारा जीवन हमारा जीवन है। इसमें किसी का हस्तक्षेप नहीं है, नहीं होना चाहिये। यदि हम शान्ति से चुपचाप कुछ करें तो हमें कोई कुछ नहीं कहता। पर जब हम अपनी किसी क्रिया को, कार्य को; भुनाने की कोशिश करते हैं; तब हजारों झँझटें खड़ी हो जाती हैं।

सल्लेखनापूर्वक मरण चुनना हमारा मूलभूत अधिकार है।

आप कह सकते हैं कि जीना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, मरना नहीं।

सल्लेखना में हम मरण के लिये प्रयास नहीं करते; अपितु अंतिम साँस तक जीने का ही प्रयास करते हैं; किन्तु जब मरण अनिवार्य हो जाता है, तब क्या हम शान्ति से मर नहीं सकते? **शान्ति से जीना और शान्ति से मरना हमारा दायित्व है; जिसे हम समताभावपूर्वक निभाते हैं।**

इस बात को हम अनेक बार स्पष्ट कर आये हैं कि जब मृत्यु एकदम अनिवार्य हो जावे, बचने का कोई उपाय शेष न रहे, तभी सल्लेखना ग्रहण करें।

यद्यपि यह सत्य है कि हमारी अंतरंग क्रियाओं से किसी को कुछ भी लेना-देना नहीं है; तथापि यह भी सत्य ही है कि हमारे आडम्बर किसी को स्वीकार नहीं होते। अतः आडम्बरों से बचना हमारा परम कर्त्तव्य है।

सम्पूर्ण समाज से हमारा विनम्र निवेदन है कि प्रभावना के नाम पर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा न करें; जिससे किसी को हमारे धर्म में हस्तक्षेप करने का मौका मिले।

जिन्होंने इसे महोत्सव कहा है; उन्होंने भी महान मुनिराजों पर आये संकटों की, उपसर्गों की चर्चा करके संकटग्रस्त संल्लेखनाधारियों को ढाँढ़स बंधाया है। अतः वहाँ उत्सव जैसी कोई बात नहीं है।[१]"

अखिल बंसल – कोर्ट के इस फैसले से समाज जागृत हो गया है, सतर्क हो गया है; उसमें अभूतपूर्व एकता हो गई है। आज इस मामले में सभी दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी एक जाजम पर आ गये हैं, एक साथ खड़े हो गये हैं।

डॉ. भारिल्ल – अच्छी बात है। ऐसे समय पर एक नहीं होंगे तो कब होंगे? ●

१. आगम के आलोक में – समाधिमरण या सल्लेखना, पृष्ठ-३८

दृष्टि का विषय

16 पाँचवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब यदि कोई कहे कि भेद को मुख्य कब करेंगे और अभेद को गौण कब करेंगे ?

उससे कहते हैं कि अरे भाई ! जब हमें विस्तार से वह बात समझनी होगी, तब अभेद को गौण करेंगे और भेद को मुख्य करेंगे।

जैसे – ऐसा कहा जाता है कि अभेद का लक्ष्य करने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होगी, सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होगी और यदि यही अभेद का लक्ष्य अन्तर्मुहूर्त तक कायम रहा तो केवलज्ञान की भी प्राप्ति होगी – ऐसा कहकर भेद के लक्ष्य से ही अभेद का लक्ष्य कराया।

हम सब दृष्टि के विषय में से पर्याय को निकालने के लिए इसलिए तैयार हैं; क्योंकि हमें सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है, पर्याय में निर्मलता प्रकट करनी है। **इसप्रकार पर्याय में निर्मलता प्रकट करने के लिए भेद की उपेक्षा है। जब पर्याय की ओर नहीं देखते हैं तो उसमें भी हमारा प्रयोजन पर्याय को शुद्ध करना ही होता है।**

लोक में भी ऐसा ही निरन्तर होता है कि जब बेटा व्यर्थ में ही अनाप-शनाप रुपया खर्च करता है तो बाप कहता है – 'अब हम तुम्हें रुपया नहीं देंगे' और बेटा पाँच रुपये भी माँगता है तो बाप उसे देने के लिए मना कर देता है। बाप सोचता है कि यदि ये ऐसे ही रुपये बर्बाद कर देगा तो इसके पास क्या बचेगा? लेकिन वह बाप उसको बाद में ५ करोड़ रुपये देने के लिए ही अभी ५ रुपये भी नहीं देता है।

गुरुदेवश्री भी अपने प्रवचन में एक प्रसंग सुनाया करते थे –

एक सेठ था और उसके बेटे ने दो लाख रुपये का नुकसान कर दिया तो वह सेठ बहुत आकुल-व्याकुल हो गया और उसने अपने बेटे से कह दिया –

''निकल जाओ घर से और मेरे घर में कभी मत आना।''

फिर गुरुदेवश्री ने उस सेठ को बुलाया और उससे पूछा –

''क्या बात है, इतने आकुल-व्याकुल क्यों हो रहे हो ?''

उसने कहा – ''साहब ! इसने मेरे दो लाख रुपये बर्बाद कर दिये'' – तब गुरुदेवश्री ने पूछा – किसके बर्बाद कर दिए? तुम वे रुपये इसको ही देकर जाओगे न ? ये समझ लो कि उसने दो साल पहले ले लिए। वास्तव में तो उसने अपने ही रुपये बर्बाद किए हैं।

अब यदि तुम उसे घर से बाहर निकाल दोगे तो जो रुपये तुम्हारे पास बचे हैं, वे भी बर्बाद हो जायेंगे; क्योंकि यदि तुमने उसको नहीं दिए तो बर्बाद ही हुए न !''

अब मैं पूछता हूँ – यदि वह गुस्से में अपने बेटे को निकाल भी रहा है तो वह राग की तीव्रता है या द्वेष की तीव्रता? अरे भाई! यदि पड़ौसी के बेटे ने दो लाख रुपये खो दिए हों तो गुस्सा नहीं आता है। जिससे राग होता है, यदि उसने खो दिए हों तो गुस्सा आता है; जिससे राग नहीं हो और उसने खोए हों तो गुस्सा नहीं आता है। **यह दिखता तो द्वेष है, लेकिन है राग की तीव्रता।**

पर्याय की शुद्धि के लिए ही पर्याय को दृष्टि के विषय में गौण करते हैं। यहाँ पर्याय सर्वथा गौण कहाँ हुई? 'पर्याय' की शुद्धि के लिए – इस अपेक्षा तो पर्याय मुख्य ही है।

रावण ने बहुरूपिणी विद्या सिद्ध करने के लिए चन्द्रप्रभ चैत्यालय में जाकर ध्यान किया। उसने हथियार इकट्ठे करने के लिए सात दिन तक लड़ाई बन्द रखी। वह हथियार इकट्ठे करने के लिए विद्या सिद्ध करना चाहता था, न कि लड़ाई बन्द करने के लिए। उसने चन्द्रप्रभ चैत्यालय का उपयोग इस अर्थ में किया था कि मेरे हाथ में ऐसा हथियार आ जाए कि शत्रु मुझे जीत ही न पावे।

आप जानते होंगे कि जब ईराक और कुवैत की लड़ाई हुई थी तो सद्दाम हुसैन को किसप्रकार झुकाया गया था। उसने अपने निवास स्थान को इसप्रकार बना रखा था कि उस स्थान पर कितने भी बम क्यों न फेंको, वहाँ असर नहीं होगा। अतः सद्दाम को मारने के लिए कुछ इंजीनियरों और कुछ डॉक्टरों को इकट्ठा किया गया और उन्हें चौबीसों घंटे बन्द रखा गया, ताकि वे ध्यानपूर्वक विचार करके उसका उपाय खोज सकें। उन सभी ने फिर रिसर्च की और एक ऐसी चीज बनाई, जिसके माध्यम से सद्दाम हुसैन के निवासस्थान को भेदा जा सकता था।

जिसप्रकार रावण की बहुरूपिणी विद्या ध्यान से सिद्ध हुई थी, उसीप्रकार सद्दाम हुसैन भी वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के ध्यान से ही झुका। **जैसे सद्दाम हुसैन को ध्यान के बिना नहीं झुकाया जा सका, वैसे ही कर्मों का नाश भी ध्यान के बिना नहीं हो सकता है।**

इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि भेद को गौण कर अभेद पर ध्यान रखना होगा; क्योंकि भेद के लक्ष्य से अभेद मालूम नहीं पड़ता है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 5 का शेष...)

राजस्थान प्रान्त

1. जयपुर : पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **2. जयपुर :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **3. जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, **4.उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, **5. देवली (आदिनाथ जिनालय) :** पण्डित संचितजी शास्त्री, **6. देवली (चन्द्रप्रभ) :** पण्डित सतेन्द्रजी शास्त्री, **7.8. रावतभाटा :** पण्डित विशालजी शास्त्री व पण्डित अंकुशजी शास्त्री, **9. जयपुर (जगतपुरा) :** पण्डित अरुणजी शास्त्री बंड, **10.11. अलवर :** पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री भौंती एवं पण्डित अजितजी शास्त्री फुटेरा, **12.जयथल :** पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, **13. झालरापाटन :** पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली, **14. तालेडा :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, **15. अलीगढ :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री झालावाड, **16. भीण्डर :** पण्डित शुभमजी शास्त्री सागर, **17.कुशलगढ (तेरापंथी) :** पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगांव।

उत्तरप्रदेश प्रांत

1. अफजलगढ : पण्डित प्रदीपजी शास्त्री धामपुर, **2. भोगांव :** पण्डित विकासजी शास्त्री इन्दौर, **3. करहल :** पण्डित मनीषजी शास्त्री भिण्ड, **4. सहारनपुर :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री मौ, **5. कुरावली :** पण्डित शशांकजी शास्त्री दलपतपुर, **6.खेकड़ा :** पण्डित यशजी शास्त्री पिड़ावा, **7.रानीपुर-झांसी :** पण्डित नीलेशजी छिन्दवाड़ा, **8. गन्नौर :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री मौ, **9. बांदा :** पण्डित अक्षयजी शास्त्री।

गुजरात प्रान्त

1. अहमदाबाद (सम्राटनगर) : डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री उदयपुर, **2. अहमदाबाद (महावीर नगर):** पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, **3. अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, **4. जहेर :** पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना, **5.बड़ौदा (गोटाद) :** ब्र. प्रवीणजी देवलाली।

अन्य प्रान्त

1.2. बेलगांव : पण्डित वीतरागजी शास्त्री एवं पण्डित अक्षयजी शाम शास्त्री, **3. खैरागढ :** पण्डित पन्नालालजी देवलाली, **4. बलौदा बाजार :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री, **5.रायपुर (चूड़ीलाइन) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़ावरा, **6. रायपुर (शंकरनगर) :** पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना, **7.8. रायपुर :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा।

दिल्ली

1-3. दिल्ली : पण्डित मधुरजी शास्त्री सागर, पण्डित अनेकांतजी शास्त्री रहली, पण्डित प्रबलजी शास्त्री बड़ामलहरा।

निबंध लिखकर भेजें

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप वर्धमान कोटा के तत्त्वावधान में **धर्म व समाज से विमुख होता युवा : कारण व निवारण** विषय पर अधिकतम 250-300 शब्दों में निबंध लिखकर भेजें। निबंध के साथ अपना पूरा पता व फोन नं. अवश्य लिखें। अन्तिम तिथि -30 सितम्बर 2015 **निबंध भेजने का पता -** अशोक कुमार जैन हरसौरा C/o सीमा आईसक्रीम पार्लर (दिनेश गैस एजेन्सी के पास), 1-ट-13, विज्ञान नगर, कोटा (राज.) मो.-9462311767, 9414175123; कैलाशचंद जैन पटवारी, बी-521, इन्द्रा विहार, कोटा (राज.) मो.-9829120913, 7568937499

सल्लेखना के समर्थन में विशाल मौन जुलूस

राजस्थान हाइकोर्ट द्वारा जैन धर्म के सल्लेखना को आत्महत्या बताये जाने के विरोध में दिनांक 24 अगस्त को धर्म बचाओ आन्दोलन के अन्तर्गत पूरे देश में सैंकड़ों स्थानों पर विशाल मौन जुलूस निकाला गया।

जयपुर में भी लगभग 3 कि.मी. लम्बे जुलूस में टोडरमल महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों सहित लाखों साधर्मियों ने भाग लिया। श्री राजेन्द्र के. गोधा एवं श्री सुभाषचन्द जैन के मुख्य संयोजकत्व में जयपुर में जुलूस प्रात: 10.00 रामलीला मैदान से प्रारम्भ होकर जौहरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार, चौड़ा रास्ता, एम.आई.रोड़ होते हुये महावीर स्कूल में जाकर विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो गया। जुलूस में पुरुष सफेद वस्त्र एवं महिला वर्ग केसरिया साड़ी में बायें हाथ पर काली पट्टी विरोध स्वरूप बांधकर सम्मिलित हुये। इस दिन पूरे देश में जैन समाज के प्रतिष्ठान, शिक्षण संस्थाएं बन्द रहीं एवं कर्मचारी भी अवकाश पर रहे।

ज्ञातव्य है कि अमेरिका, लंदन, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भी जैन समाज ने मौन जुलूस निकालकर विरोध प्रदर्शन किया।

हार्दिक आमंत्रण

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 17 वाँ

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार 18 अक्टूबर से मंगलवार 27 अक्टूबर 2015 तक)

इस शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया आवासादि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127